प्रवासी पक्षी

कुछ पक्षी पिंटेल बत्तख, कर्लियू, फ़्लैमिंगो, ऑस्प्रे, लिटिल स्टिंट प्रत्येक वर्ष सर्दी के मौसम में हमारे देश आते हैं। सबसे छोटी लिटिल स्टिंट जिसका वजन लगभग 15 ग्राम होता है , आर्कटिक प्रदेश से 8000 किलोमिटर की दूरी तय करके भारत आती है

स्टोर्क-एक प्रवासी पक्षी

अभ्यास

KJPUKH

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।

(i) कौन-सी पवन भारत में वर्षा लाती है? यह इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों है?

(ii) भारत के विभिन्न मौसमों के नाम लिखिए।

(iii) प्राकृतिक वनस्पति क्या है?

(iv) भारत में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के नाम लिखिए।

(v) सदाबहार वन तथा पतझड़ वन में क्या अंतर है?

(vi) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों को सदाबहार वन क्यों कहा जाता है?

2. सही उत्तर चिह्नित (✓) कीजिए।

(i) विश्व में सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र कौन-सा है

क. मुंबई   ख. आसनसोल   ग. मौसिनराम

(ii) मैंग्रोव वन कहाँ हो सकते हैं?

क. खारे जल में   ख. साफ जल में   ग. प्रदूषित जल में

(iii) महोगनी एवं रोजवुड वृक्ष पाए जाते हैं-

क. मैंग्रोव वन में

ख. उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वन में

ग. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन में

(iv) जंगली बकरी तथा हिम तेंदुए कहाँ पाए जाते हैं?

क. हिमालय क्षेत्र में   ख. प्रायद्वीपीय क्षेत्र में   ग. गिर वन में

(v) दक्षिण-पश्चिम मानसून के समय आर्द्र पवनें कहाँ बहती हैं?

क. स्थल से समुद्र की ओर

ख. समुद्र से स्थल की ओर

ग. पठार से मैदान की ओर

3. खाली स्थान भरें।

(i) गर्मी में दिन के समय शुष्क तथा गर्म पवनें चलती हैं जिन्हें _______________ कहा जाता है।

(ii) आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में _________________ के मौसम में बहुत अधिक मात्रा में वर्षा होती है।

(iii) गुजरात के _________________ वन _________________ का निवास है।

(iv) _________________ मैंग्रोव वन की प्रजाति है।

(v) _________________ को मानसून वन भी कहा जाता है।

आओ खेलें

1. अपने आस-पास के वृक्षों की सूची बनाएँ, वनस्पति, जंतुओं एवं पक्षियों के चित्र इकट्ठा करें तथा उन्हें अपनी कॉपी पर चिपकाएँ।
2. अपने घर के पास एक पौधा लगाएँ तथा उसकी देखभाल करें एवं कुछ महीने के भीतर उसमें आए परिवर्तनों का अवलोकन करें।
3. क्या आपके आस-पास के क्षेत्र में कोई प्रवासी पक्षी आता है? उसको पहचानने की कोशिश करें। सर्दी के मौसम में विशेष ध्यान दें।
4. बड़ों के साथ अपने शहर के चिड़ियाघर या नजदीक के वन या पशुविहार को देखने जाएँ। वहाँ विभिन्न प्रकार के वन्य जीवन को ध्यानपूर्वक देखें।

अध्याय 9

छत्तीसगढ़ का पहाड़ी, मैदानी और पठारी गाँव

9.1 पहाड़ी गाँव- ऊपरवेदी

हमारे छत्तीसगढ़ का धरातल काफी विविधतापूर्ण है। एक तरफ घने जंगलों से ढँके ऊँचे पहाड़ और गहरी घाटियाँ हैं तो दूसरी तरफ लंबे–चौड़े समतल मैदान और ऊँचे–ऊँचे पठार भी हैं। हमारे लोग इन सभी इलाकों में रहकर कड़ी मेहनत से तरह–तरह की चीजों का उत्पादन करते हैं और हमारी संस्कृति को विविधता से सँवारते हैं।

आप जानना चाहेंगे कि इन सभी इलाकों में रहनेवाले लोगों का जीवन किस प्रकार का होता है? तो आइए, इस पाठ में हम दुर्गम पहाड़ों पर रहनेवाले लोगों के जीवन के बारे में पढ़ते हैं। इस पाठ में हम जानेंगे कि उनके यहाँ क्या–क्या चीजें मिलती हैं और उन चीजों का वे किस तरह उपयोग करते हैं। लेकिन यह सब जानने के लिए हमें बस्तर संभाग की ओर चलना होगा।

चित्र 9.1 पहाड़ी रास्ता

बस्तर के पहाड़ी भाग

बस्तर संभाग में अबूझमाड़ की पहाड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। इन पहाड़ियों की श्रृंखला इस संभाग के उत्तर–पश्चिम दिशा में फैली है। कांकेर से दक्षिण की तरफ जाने पर इन पहाड़ियों के छोर दिखने लगते हैं। 16 फरवरी 2004 को इन्हीं पहाड़ियों पर बसे एक गाँव को देखने के लिए हमारा समूह चल पड़ा। कांकेर के बस स्टैण्ड से कुछ ही दूरी पर दूध नदी और उसके किनारे गढ़िया

ekufp= 9-1-1

पहाड़ का दृश्य बड़ा ही सुंदर लग रहा था। यहीं से इधर–उधर कुछ पहाड़ियाँ भी दिखाई देने लगी थीं। बस चल पड़ी। लगभग 30 किलोमीटर आगे दक्षिण दिशा की ओर जाने पर एक ऊँची और घने जंगल से ढँकी पहाड़ी दिखाई दी। तेज घुमावदार मोड़ व चढ़ाई को देख हमारी साँस अटकती जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि हम उसी स्थान पर गोल–गोल घूम रहे हों। घाटी की सुंदरता का आनन्द लेते हुए हम उसकी चोटी पर पहुँच गए। ऊपर पहुँचने पर हमें माता का एक मंदिर और पंचवटी उद्यान मिला जो अत्यंत रमणीय हैं। इस चोटी के आसपास की घाटियों को केशकाल घाटी कहते हैं। यहाँ से थोड़ी दूर पर ही विकासखंड मुख्यालय केशकाल स्थित है।

अभी केशकाल से लगभग 5–6 किलोमीटर आगे ही गए थे कि हमें पक्की सड़क छोड़कर घने जंगलों के बीच घुसना पड़ा तब यहां मूरुम की सड़कें थीं। कच्चे उबड़–खाबड़ पथरीले रास्ते के बीच पतली–सी सड़क और कहीं–कहीं तो वह भी जंगलों में गायब हो जाती थी। (चित्र 9.1.1) रास्ते में कुछ बच्चे चिड़ियों और छोटे जानवरों का शिकार करते मिले। एक–दो महिलाएँ भी महुआ बीनतीं और पत्तियाँ तोड़तीं दिखाई दीं। महुआ, आम, साल, हर्रा, बहेरा, डूमर, आदि के सघन पेड़ों के बीच कहीं एकाध गाँव झाँकता हुआ–सा दिखाई दे जाता था।

इसी तरह लगातार करीब 20 किलोमीटर पश्चिम दिशा में चलने के बाद ऊँची चढ़ाई पर ऊपरवेदी गाँव दिखाई पड़ा। ऐसा लगा मानो चढ़ाई चढ़ते–चढ़ते हम ऊपर की वेदी (चबूतरे) पर पहुँच गए हों। गाँव में पहुँचकर हमने देखा कि इसके तीनों दिशाओं, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की ओर तेज ढाल है।

NÙkhlx< dk ,Vyl esa nf[k, fd vcw>ekM+ dh igkfM+;ksa dgka ij gSA

ऊपरवेदी की बसाहट

मानचित्र 9.1.1 देखकर खाली स्थानों को भरें–

कांकेर से ––––––– दिशा में जाने पर केशकाल आया और केशकाल से –––––––– दिशा में जाने पर ऊपरवेदी मिला।

ऊपरवेदी गाँव की बसाहट हमें काफी बिखरी हुई दिखाई पड़ी। थोड़ी–थोड़ी दूर पर एक–दो घरों के समूह अलग–अलग दिखाई दे रहे थे। लेकिन गाँव की कच्ची पगडंडियों ने उन्हें आपस में जोड़ रखा था। गाँव पहुँचकर हम पेड़ों की छाँव में बैठे ही थे कि एक बूढ़ा आदमी हमें दिखाई पड़ा। हमने उनसे पूछा– "आज आपके गाँव में कोई दिखाई नहीं दे रहा? सब कहाँ गए ?"

उसने कहा– ''सब जंगल गए हैं।''

"वे सब कब तक आएँगे?" हमने पूछा।

''उनका क्या, गाँव में तो कुछ है नहीं। जब सारी जरूरतें जंगल से ही पूरी होनी हो तो फिर गाँव में रहकर क्या करेंगे।''

चित्र 9.1..2 ऊपरवेदी के युवक

उसके इस उत्तर से हम सोच में पड़ गए कि यदि यहाँ के लोगों से मिल ही न पाए तो यहाँ आना ही बेकार हो जाएगा। फिर हमने उनसे पूछा–''क्या आप हमें उन लोगों के पास जंगल में ले जा सकते हैं?'' वह तैयार हो गया और हम उसके साथ चल पड़े। कुछ दूर चलकर हम तेज ढलान पर पहुँच गए और तेजी से नीचे उतरने लगे। जब हम नीचे पहुँचे तो वहाँ एक छोटा–सा नाला बहता दिखाई दिया। उसी नाले के पास हमें कुछ लोग काम करते दिखे। वे गाँव के ही लोग थे। हमें देखकर वे सब इकट्ठे हो गए और पास आकर बैठ गए। सभी के पास कुल्हाड़ी, फावड़े और तुंबी थी (चित्र 9.1.2)।

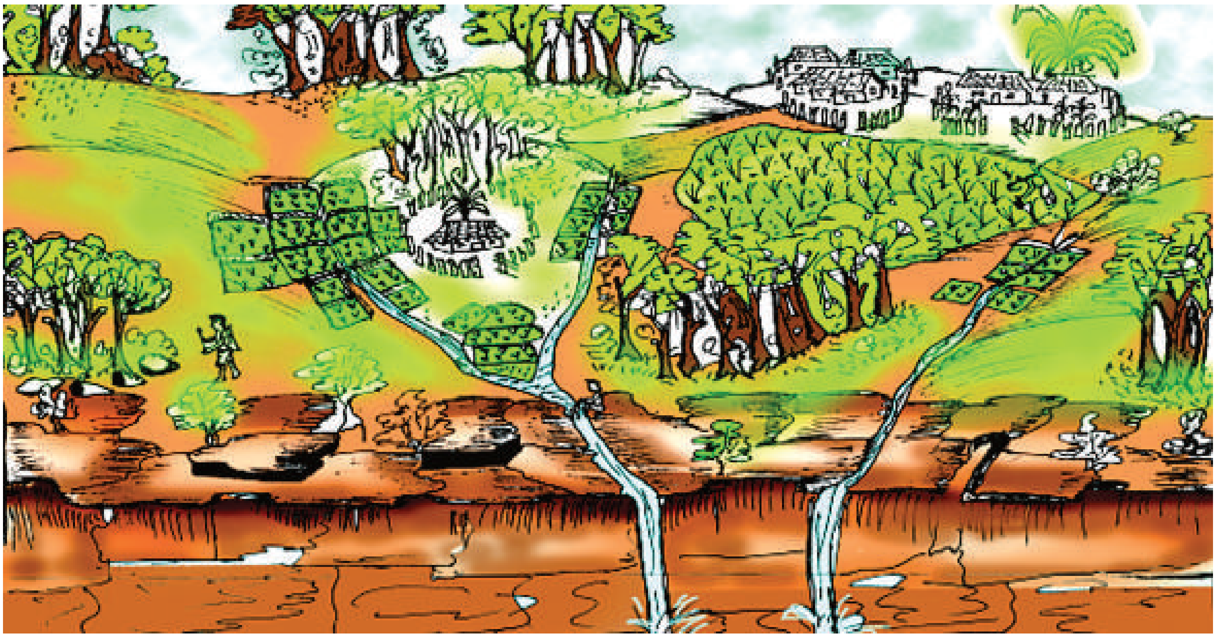

चित्र 9.1.3 ऊपरवेदी का दृश्य

शुरु में तो हम इधर–उधर की बातें करते रहे। मगर थोड़ी–सी बातचीत के बाद वे हमें अपने गाँव और अपने जीवन के बारे में खुलकर बताने लगे।

गाँव का चित्र 9.1.3 देखकर बताइए:–

1. गाँव में कितने नाले हैं?
2. गाँव में जंगल अधिक हैं या खेत?
3. जलप्रपात कहाँ पर हैं?

नाले

उन्होंने बताया कि उनका गाँव पहाड़ी की ऊँचाई पर बसा हुआ है। गाँव की दक्षिणी सीमा पर बहुत ऊँची कगार है जहाँ से पानी जल प्रपात बनकर गिरता है। बस्ती के तीन तरफ तेज ढाल है और वह तीनों ओर से छोटे–छोटे नालों से घिरा है। उन्होंने बताया कि ये नाले ही उनके पानी के प्रमुख स्रोत हैं। यहीं से उन्हें पीने का पानी मिलता था परंतु जबसे गांव में दो ट्यूबवेल खोदा गया पीने का साफ पानी मिलने लगा है। और इन्हीं नालों की नमी से आसपास खेती भी होती है। इन्हीं नालों में वे मछली भी पकड़ते हैं और उनके जानवर भी यहीं पानी पीते हैं।

चित्र 9.1..4 मछली पकड़ती महिला

मिट्टी और फसल

वहाँ बैठे लोगों में गाँव के उप–सरपंच श्री अमलूराम जी भी थे। जब हमने उनसे खेती–बाड़ी के बारे में पूछा तो वे हमें गाँव के खेत दिखाने ले चले।

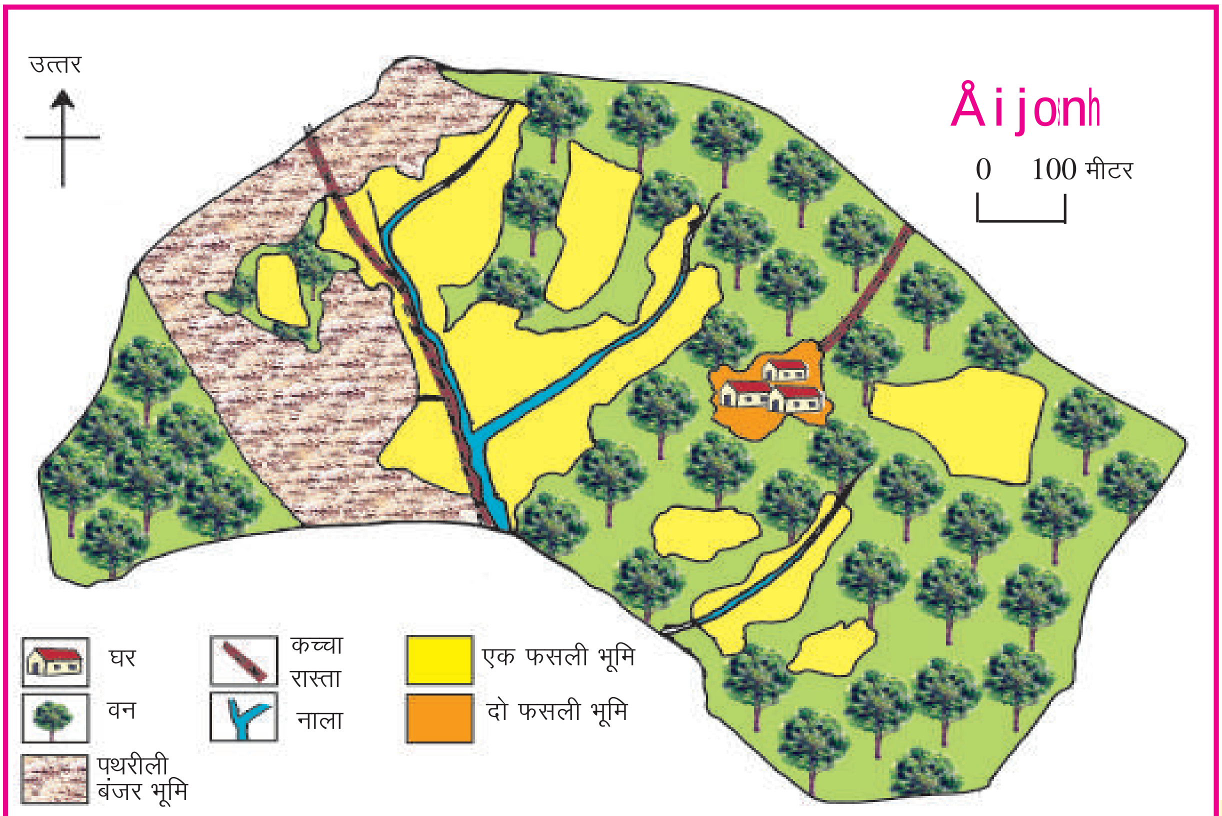

ekufp= 9-1-2

अमलूराम जी ने बताया कि जमीन ढलवाँ होने के कारण ऊपर के हिस्से से महीन और उपजाऊ मिट्टी बहकर नीचे आ जाती है और नाले के आसपास इकट्ठी हो जाती है। शायद इसीलिए नाले के पास की मिट्टी हमें कुछ गहरी व काली दिख रही थी। अमलूराम जी बता रहे थे कि यहाँ की मिट्टी को नाले से नमी भी मिल जाती है और मिट्टी भी उपजाऊ है, इसलिए यहाँ नालों के किनारे संकरी पट्टी में धान के छोटे–छोटे खेत बना लिए गए हैं। इनमें कई किस्म के धान बोये जाते हैं। अगर बारिश अच्छी हो तो देर से पकनेवाले गाड़ाकुट्टा, माई सफरी, मोटा सफरी नाम के धान बोये जाते हैं। कम बारिश होने पर तुरियापारा, तुरियासफरी, मासुरी, नाम के जल्दी पकने वाले धान बोए जाते हैं। अगर बहुत अधिक पानी गिरे तो नाले का पानी खेत की सारी फसल को ही बहा कर ले जाता है।

1. नाले के पास ही धान के खेत क्यों बने हैं?
2. नाले के पास मिट्टी गहरी क्यों है?
3. कम बारिश होने पर ––––– से पकनेवाले धाने बोते हैं और अधिक बारिश होने पर –––––– से पकने वाले धान बोते हैं। (देर/जल्दी)

भाठा जमीन पर कोदो–कुटकी

1. भाठा जमीन और नाले के पास की जमीन की मिट्टी में क्या–क्या अंतर दिखाई दिया?
2. गाँव में किस प्रकार की जमीन अधिक है?
3. भाठा जमीन पर मिट्टी और पानी को बहने से रोकने के लिए क्या–क्या उपाय किए जा सकते हैं ?

चित्र 9.1.5 कोदो कुटकी सूखाती महिला

अमलूराम जी ने हमें आगे बताया कि इस गाँव में धान तो होता है मगर बहुत कम जमीन पर। बस्ती और नाले के बीच एक बड़े इलाके में भाठा जमीन है। यहाँ की मिट्टी लाल, रेतीली और पथरीली और साथ ही जमीन समतल न होकर ढलवाँ है। बीच–बीच में ऊँचे पेड़ भी हैं। देखकर ही पता चल रहा था कि खेत जंगल को साफ करके बनाए गए थे। इस जमीन पर मेड़ कहीं भी नहीं दिख रही थीं। गाँव की खेती योग्य जमीन का सबसे बड़ा हिस्सा इसी प्रकार की जमीन का है। अमलूराम जी ने बताया कि यहाँ बरसात के दिनों में कोदो, कुटकी, ज्वार, रामतिल, परबत आदि खरीफ की फसलें उगाई जाती हैं। ये फसलें कम पानी में भी उग जाती हैं और हल्की मिट्टी में भी पैदा हो जाती हैं। लेकिन इस जमीन पर पैदावार कम होती है क्योंकि यहाँ की उपजाऊ मिट्टी पानी के साथ बह जाती है।

घर की बाड़ी में मक्का व सरसों

यहाँ के लोगों से बात करने पर हमें पता चला कि यहाँ के आदिवासी किसान सबसे अधिक भरोसा अपने घर के बाड़ों पर

चित्र 9.1.6 घर की बाड़ी

करते हैं। हरेक घर के पीछे विशाल बाड़ा होता है, जिसे लकड़ी का घेरा बनाकर जानवरों से बचाने का प्रयास किया जाता है। इन बाड़ों में सल्फी, आम, कटहल, केला जैसे फलदार पेड़, और कुल्थी, सेम, बैंगन, टमाटर जैसी सब्जियाँ भी उगाई जाती हैं। इन बाड़ों को किसान गोबर खाद और घर के कचरे आदि डालकर उपजाऊ बनाते हैं। बरसात के दिनों में इन बाड़ों में मक्का और ठंड के दिनों में सरसों उगाई जाती है। इस तरह केवल ये बाड़े ही गाँव की ऐसी जमीन हैं जिनमें दो फसलें उगाई जाती हैं।

क्या आप बता सकते हैं बाड़े की जमीन अधिक उपजाऊ क्यों होती है ?

जब हम तीनों तरह के खेतों को देखकर नाले के पास लौटे तो सबने हमें बताया कि यहाँ सिंचाई का कोई साधन नहीं है। न तालाब है, न नहर और न ही नलकूप। कुछ घर के बाड़ों में कुएँ हैं मगर पानी बहुत गहराई में है। इसलिए उनसे सिंचाई नहीं हो पाती। पहाड़ों में तेज ढाल होने के कारण पानी बह जाता है और मिट्टी में नमी नहीं रहती। उपजाऊ मिट्टी भी कुछ छोटे–छोटे टुकड़ों में ही मिलती है। इस कारण वहाँ खेती लायक जमीन बहुत कम है। जो जमीन है भी वह ज्यादातर कमजोर है। इन सब कारणों से यहाँ खेतों में उत्पादन कम होता है। बस 6–8 माह का काम उससे चल जाता है। शेष दिनों के लिए उन्हें जंगल पर निर्भर रहना पड़ता है।

चित्र 9.1.7 तेंदू पत्ता का बंडल बाँधती महिलाएँ

जंगलों का उपयोग

ऊपरवेदी के लोग बड़े पैमाने पर जंगलों का उपयोग करते हैं। वे लोग गाय, बैल, भैंस, बकरी, सुअर, मुर्गी आदि बड़ी मात्रा में पालते हैं। इन्हें चरने के लिए वे जंगल में छोड़ देते हैं। इनसे उन्हें दूध, मांस और अंडे मिलते हैं। ये उनके भोजन के महत्वपूर्ण अंग हैं।

शिकार, कंदमूल, फल

गाँव के बच्चे, महिलाएँ और पुरूष छोटी–छोटी टोलियों में जंगलों में तीर–कमान, कुल्हाड़ी और टोकरी के साथ जाते हैं। वे जंगल से खाने योग्य फल–फूल, कंद, साग–सब्जी इकट्ठा कर लाते हैं। साथ ही खरगोश, साही और चिड़ियों को मारकर लाते हैं और नाले में मछलियाँ भी पकड़ते हैं। गर्मी में इन्हें चार, तेन्दू, कड़ी, आम, आँवला, कोसम, महुआ, गुल्ली, बहेरा, साल बीज, आदि मिलते हैं। बरसात में करू कांदा, तरगैया कांदा, जिर्रा आदि मिलते है। इनके अलावा कई तरह की साग–भाजी आदि भी इन्हें जंगल से मिल जाती हैं।

चित्र 9.1.8 शिकार करते हुए

वनोपज का व्यापार

जंगल से प्राप्त चीजों से उनके भोजन में न केवल विविधता आती है बल्कि उन्हें तरह–तरह के स्वाद भी मिलते हैं। इनसे पौष्टिकता भी मिलती है। इनमें से कई चीजें बाजार में ऊँचे दामों पर बिकते हैं जैसे चिरौंजी, हर्रा, बहेरा, तेंदू के पत्ते और फल, आदि। इन्हें यहाँ के निवासी पास के कस्बे घनोरा या केशकाल ले जाकर बेचते हैं और बदले में अनाज, नमक, तेल, कपड़ा आदि खरीदते हैं। लेकिन अक्सर इन्हें अपने सामान का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। यहाँ के लोगों की यह एक मुख्य समस्या है।

चित्र 9.1.9 महिलाएँ वनोपज ले जाती हुई

घर के लिए लकड़ी

यहाँ के लोगों के घर सीमेंट, ईंट या लोहे के नहीं बने होते बल्कि मिट्टी और लकड़ी के बने होते हैं। इसके लिए लकड़ी उन्हें जंगल से ही मिलती है।

मजदूरी

ऊपरवेदी के लोग समय–समय पर वन विभाग जैसे शासकीय विभागों के लिए मजदूरी भी करते हैं। वन विभाग यहाँ उनसे वृक्षारोपण करवाता है। कभी–कभी वे सड़क निर्माण का काम भी करते हैं।

1. ऊपरवेदी के लोगों को जंगल से खाने के लिए क्या–क्या मिलता है?
2. यहाँ के लोग पास के बाजारों में क्या–क्या बेचते हैं?

वनों का बचाव

हमने देखा कि ऊपरवेदी और उसके आस–पास रहनेवाले आदिवासी जंगलों पर कितने ज्यादा निर्भर हैं। फिर भी हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहाँ के जंगल काफी घने हैं और गाँव की सीमा के अंदर भी जंगल हैं। जंगलों का इतना ज्यादा उपयोग करने पर भी जंगल नहीं कटे हैं और नष्ट भी नहीं हुए हैं। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि यहाँ के लोग जंगलों का उपयोग अपने घरेलू जरुरत

चित्र 9.1.10 वृक्षारोपण

के लिए नियंत्रित रूप में करते हैं। बाजार में बेचकर मुनाफा कमाने के लिए अंधाधुंध कटाई नहीं करते। इसी कारण जंगल अभी तक बचे हुए हैं।

आदिवासी लोग

उस समय गाँव में लगभग 21 घर थे और इनमें कुल 134 लोग रहते थे। लगभग सभी लोग गोंड आदिवासी हैं और वे सभी एक दूसरे के रिश्तेदार भी हैं। इनमें से कोई भी बहुत धनी या बहुत गरीब नहीं है। इस कारण उनमें आपसी मेल–जोल काफी अधिक है। पेज इनका मुख्य भोजन है। यह चावल, मड़िया, मक्का, डूमर, आदि को एक साथ उबालकर बनाई जाती है। सल्फी का वृक्ष सभी के घरों में पाया जाता है। इसका रस निकालकर वे पीते हैं।

आपसी सहयोग

गाँव के लोगों से और बातचीत करने से हमें यह भी पता चला कि यहाँ परिवार की जिम्मेदारी स्त्री–पुरूष दोनों मिलकर उठाते हैं। यहाँ के लोगों में आपसी सहयोग व सहकारिता की भावना महत्वपूर्ण है। यदि किसी व्यक्ति का खेत बोना हो या घर का कोई काम करना हो तो सभी उस व्यक्ति का सहयोग करने पहुँच जाते हैं। उसके बदले उन्हें किसी तरह की मजदूरी नहीं दी जाती। वह व्यक्ति उनके खाने–पीने की व्यवस्था करता है। दूसरे दिन किसी अन्य व्यक्ति के घर काम होने पर वह भी स्वयं परिवार सहित उसके घर काम करने पहुँच जाता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग व सहकारिता की आवश्यकता है।

घोटुल

गाँववालों ने हमें यह भी बताया कि ज्यादातर आदिवासी गाँवों की तरह उनके गाँव में भी घोटुल की व्यवस्था थी। घोटुल एक तरह का सामाजिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र होता था। इस स्थान पर

अविवाहित लड़के और लड़कियाँ शाम को एकत्र होकर नाचते–गाते और अनेक तरह के मनोरंजक खेल खेलते थे। घोटुल में ही अविवाहित लड़के–लड़कियों के बीच शादी तय होती थी। घर के बड़े लोग उनकी पसंद को स्वीकार करते हुए उनकी शादी करा देते थे।

प्राकृतिक संपदा से भरा–पूरा होने के बावजूद उस समय इस गाँव में आधुनिक सुविधाओं की कमी थी। पक्की सड़क, साफ पीने का पानी, बिजली, स्कूल, अस्पताल, आदि यहाँ उपलब्ध नहीं थे। बीमार पड़ने पर वे विवश होकर झाड़–फूँक ही करवा पाते थे। बीमारी का उचित इलाज नहीं हो पाता था।

ऊपरवेदी से लौटते हुए हम ये महसूस कर रहे थे कि छत्तीसगढ़ के पहाड़ी क्षेत्रों में खेती भले ही कमजोर हो पर वहाँ के वन हमारे लिए एक अमूल्य सम्पत्ति हैं। वहाँ के आदिवासियों के जीवन ने हमें काफी आकर्षित किया था। आज अन्य क्षेत्रों के भाँति विकास की रोशनी इस क्षेत्र में भी पहुंच चुकी है। अब इस गांव में स्कूल, चिकित्सा जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हैं और उपरवेदी भी निरंतर विकास की ओर अग्रसर है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थानों को भरिये :–

1. ऊपरवेदी गाँव की बसाहट काफी .... सी थी।
2. ऊपरवेदी गाँव के तीन दिशाओं में तेज .... है।
3. गाँव की जमीन ढलवा होने के कारण ऊपर की .... मिट्टी पानी के साथ बहकर नाले के पास जमा हो जाती है।

(ब) सही/गलत बताइए :–

1. ऊपरवेदी गाँव में काफी मात्रा में धान की फसल होती है।
2. गाँव के लोग अपने बाड़े में दो फसलें उपजाते हैं।
3. ऊपरवेदी के लोगों को जंगल से प्राप्त चीजों की बाजार में अच्छी कीमत मिल जाती है।
4. ऊपरवेदी गाँव में फसलों की सिंचाई कुओं से की जाती है।

(स) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. ऊपरवेदी गाँव में किस प्रकार की मिट्टी ज्यादा मात्रा में हैं ?
2. गाँव के लोग नालों का उपयोग किन–किन चीजों के लिए करते हैं ?
3. वहाँ कम बारिश होने पर किस प्रकार की फसल बोई जाती है?
4. ऊपरवेदी के जंगल किस प्रकार इतने घने बने हुए हैं ?
5. यहाँ के लोगों में आपसी मेल–जोल के क्या–क्या उदाहरण आपने देखा ?

(द) चर्चा करें :–

1. आपके विचार में ऊपरवेदी गाँव के लोगों की समस्याओं को किस प्रकार दूर किया जा सकता है ?

नोट :– यह पाठ सन् 2004 के तत्कालीन सर्वेक्षण के आधार पर लिखा गया है। वर्तमान में वास्तविक स्वरूप में कुछ अंतर हो सकता है।

9.2 मैदान का एक गाँव–रिसदा

> पिछले पाठ में हमने पहाड़ी इलाके के एक गाँव ऊपरवेदी के बारे में पढ़ा था। उससे बिल्कुल अलग तरह के गाँव मैदानों में होते हैं। आइए, इस पाठ में हम मैदानी इलाके के एक गाँव के बारे में पता करें।

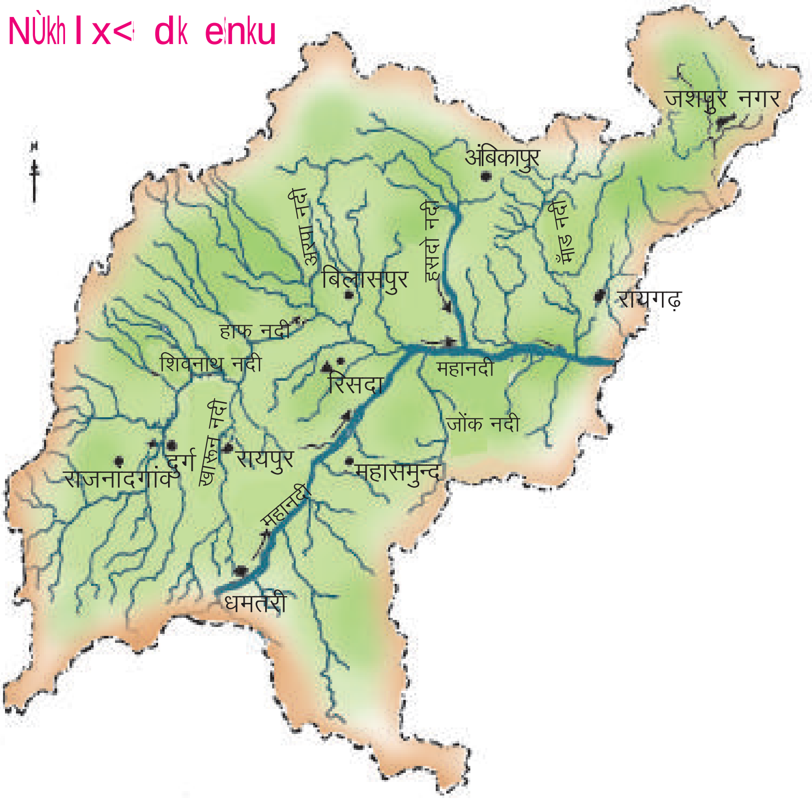

मानचित्र 9.2.1

छत्तीसगढ़ का मैदान

यह मैदान महानदी और उसकी सहायक नदी शिवनाथ द्वारा निर्मित है। मानचित्र 3.3 में देखिए इस मैदान के किनारों पर पहाड़ियाँ हैं तथा ऊँचे पठार हैं। ये नदियाँ इन पहाड़ों व पठारों से उतरकर आती हैं और वहाँ बरसने वाले पानी को मैदानों तक लाती हैं। साथ ही ये नदियाँ ऊपरी भाग से उपजाऊ मिट्टी भी लाकर यहाँ के मैदानों में बिछाती हैं। इसी कारण छत्तीसगढ़ के मैदानों की मिट्टी काफी उपजाऊ तथा नमीयुक्त है।

मैदानों में नदियाँ मिट्टी क्यों बिछाती हैं? मैदानी भूमि आमतौर पर समतल और सपाट होती हैं। ढाल कम होने के कारण पानी का बहाव धीमा हो जाता है। बहाव धीमा होने के कारण मिट्टी नदी के किनारों पर बिछती जाती है। अक्सर बरसात में नदी का पानी किनारों को पारकर आस–पास के इलाकों में फैल जाता है और उस पानी में मिली हुई मिट्टी चारों तरफ बिछ जाती है। इस तरह साल–दर–साल मिट्टी के बिछते रहने से हजारों सालों में मैदान बनता है।

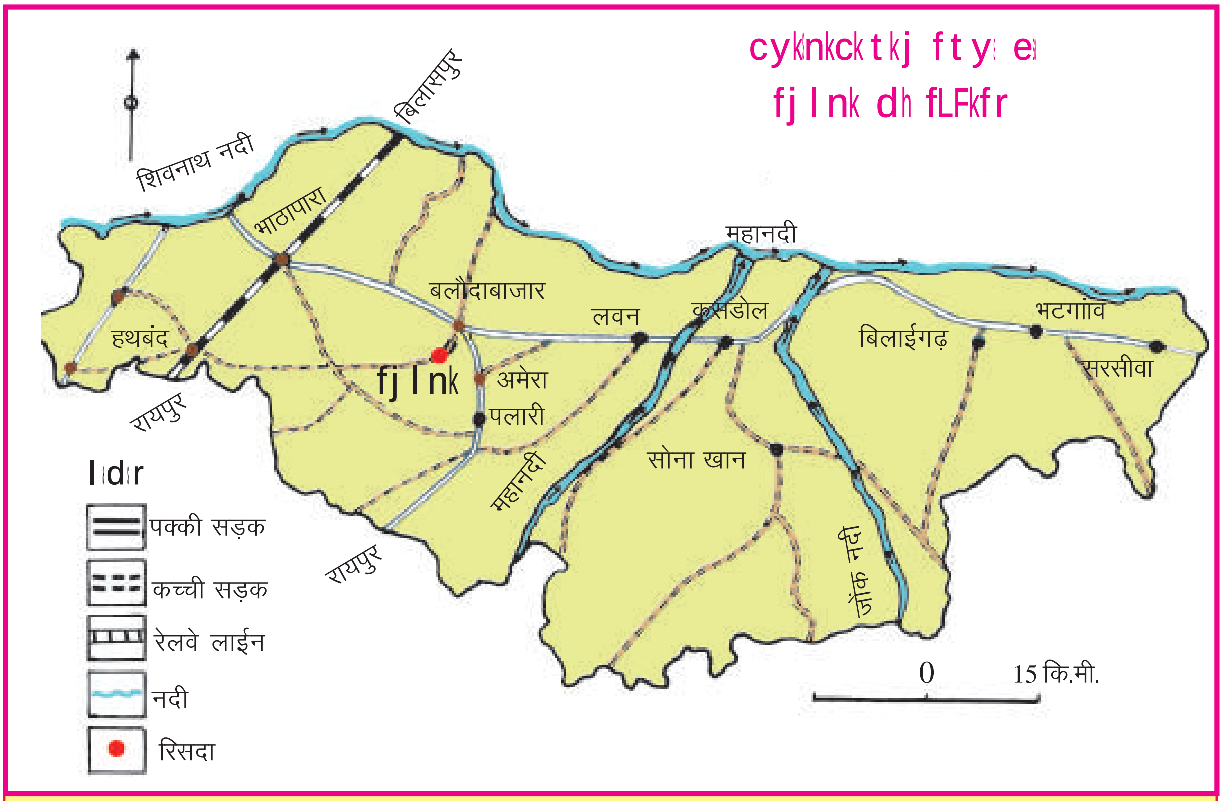

ekufp= 9-2-2

1. मानचित्र में देखिए महानदी में किन–किन दिशाओं से सहायक नदियाँ आकर मिलती है?
2. महानदी की प्रमुख सहायक नदियों को मानचित्र में पहचानकर उनका नाम लिखिए?

आइए, इस पाठ में हम शिवनाथ और महानदी के बीच के मैदान में स्थित एक गाँव रिसदा के बारे में पढ़ते हैं।

मार्ग और धरातल

रिसदा, बलौदाबाजार जिले का एक गाँव है। बलौदाबाजार से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम दिशा में यह गाँव बसा है।

मानचित्र में रिसदा की स्थिति पहचानिए :–

बलौदाबाजार से दक्षिण–पश्चिम दिशा में हथबंद की ओर चलें तो सड़क के दोनों ओर दूर–दूर तक सीधी सपाट समतल जमीन दिखाई देती है। सड़क के दोनों ओर धान के खेत हैं। फिर एक नाला–'कोकड़ी नाला' मिलता है जिसे पार करने पर हम रिसदा गाँव में पहुँच जाते हैं।

कोकड़ी नाला रिसदा गाँव की उत्तरी सीमा पर है। यह पश्चिम से पूर्व की ओर बहता है। इसी तरह गाँव की दक्षिणी सीमा पर पुराना नाला है। यह नाला भी पश्चिम से पूर्व की ओर बहता है। इन दोनों नालों के बीच बसा है रिसदा गाँव।

दोनों नालों के ऊपरी भाग में एक छोटा–सा जलाशय बनाया गया है जिसे कुकुरदी बाँध कहते हैं। इस बाँध से एक नहर निकाली गई है जो गाँव के बीच से गुजरती है। खरीफ के मौसम में इस नहर से रिसदा के अधिकांश खेतों में सिंचाई होती है।

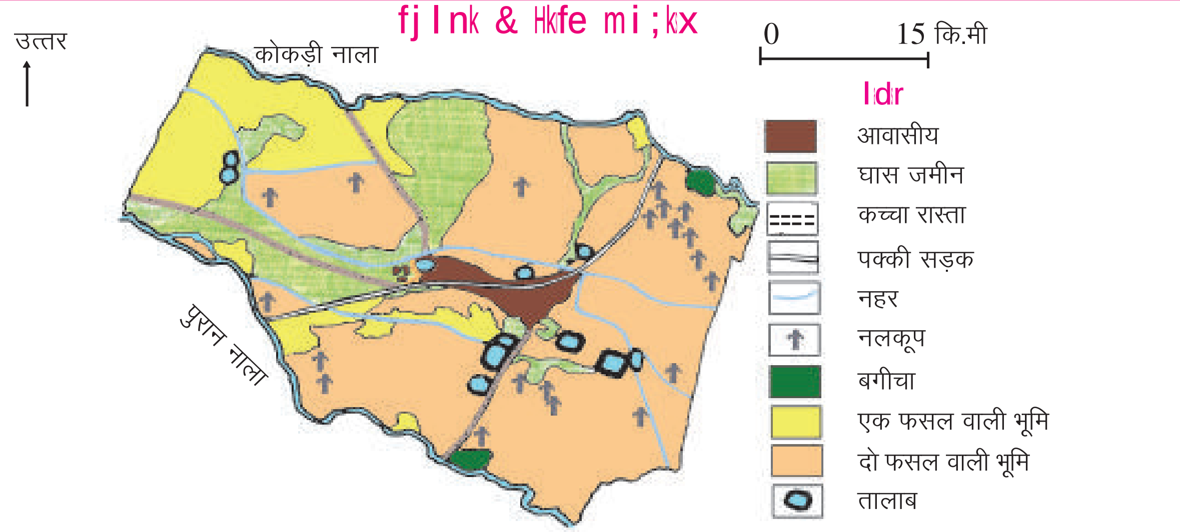

ekufp= 9-2-3

feVVh o Qly

हमने ऊपरवेदी गाँव में देखा था कि वहाँ की ज्यादातर जमीन पर जंगल हैं और खेती के लिए कम जमीन उपलब्ध है। लेकिन मैदानी गाँव रिसदा की स्थिति ऐसी नहीं है।

(इस गाँव में ऐसी जमीन जिसमें खेती नहीं की जाती बहुत ही कम है। जो थोड़ी–बहुत ऐसी जमीन है भी, वह घास–जमीन या चारागाह है।) यानी गाँव की ज्यादातर जमीन पर खेती की जाती है।

चित्र 9.2.1 धान के खेत

ऊपरवेदी गाँव में हमने देखा था कि वहाँ ज्यादातर खेती योग्य जमीन भाठा जमीन है जिसकी मिट्टी कम उपजाऊ, लाल, रेतीली और पथरीली है। इसके विपरीत मैदानी गाँव रिसदा में भाठा जमीन है ही नहीं। हाँ इस गाँव के पश्चिमी हिस्से में कुछ रेतीली भूरी मिट्टी है। इसमें पानी कम रूकता है। इसलिए इस पर सिर्फ एक फसल–धान या दलहन या तिलहन बोयी जाती है।

गाँव के बीच के हिस्से में पीली मटासी मिट्टी है– जो कि महीन कणोंवाली मिट्टी है। इसमें पानी सबसे अधिक समय तक रूकता है। यह मिट्टी धान के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। खरीफ में तो इसमें धान की फसल ली जाती है और रबी में इन्हीं खेतों में तिवरा बोया जाता है। सिंचाई की व्यवस्था होने पर यहाँ रबी में गेहूँ भी उगाया जाता है।

रिसदा गाँव के पूर्वी हिस्से में डोरसा मिट्टी (दोमट) पाई जाती है। इसमें बारीक कण और मोटे रेतीले कण बराबर मात्रा में मिले होते हैं। यह खेती के लिए सबसे अच्छी मिट्टी है। इस मिट्टी में इस गाँव के लोग आमतौर पर खरीफ में धान और रबी में गेहूँ उगाते हैं।

रिसदा के दोनों तरफ स्थित नालों के किनारे काली कन्हार मिट्टी पाई जाती है। पानी को रोकने की क्षमता इसमें सबसे अधिक होती है। इसमें बरसात के बाद ठंड के मौसम में भी नमी रहती है। इस कारण कन्हार मिट्टी में गेहूँ व चना जैसे रबी की फसलें ली जाती है।

fl pkbZ

हमने देखा कि रिसदा की ज्यादातर जमीन पर सिंचाई की व्यवस्था होने पर दो फसलें ली जा सकती हैं। अब देखें कि यहाँ सिंचाई के कौन–कौन से साधन उपलब्ध हैं।

चित्र 9.2.2 बांध और नहर

1- vkid xkao e fdl&fdl idkj dh feVVh ikb tkrh g \ mle D;k&D;k mxk;k tkrk g \

2- fjDr LFkku Hkfj, %&

¼v½ lcl vf/kd ikuh jkdu dh {kerk &&&&&&&&&&& feVVh e g tcfd &&&&&&&&&& feVVh e ;g lcl de gA

¼c½ &&&&&&&&& feVVh /kku dh [krh d fy, vPNh g tcfd &&&&&&& feVVh /kku vkj xg nkuk d fy, mi;Dr gA

¼l½ eVklh feVVh e /kku d ckn jch e &&&&&&&& ;k &&&&&&& ck;k tkrk gA

¼n½ Mkjlk feVVh e /kku d ckn &&&&&&&& ck;k tkrk gA

¼b½ xg@puk &&&&&&&&& feVVh e vf/kd ink gkrh gA

ugj

पहाड़ी इलाकों की तुलना में मैदानी इलाकों में तालाब या जलाशय बनाना ज्यादा आसान है। जमीन समतल होने के कारण यहाँ नहर भी आसानी से बन जाती है। आप अब तक पढ़ चुके हैं कि रिसदा गाँव के पश्चिम में कुकुरदी जलाशय है। यहाँ से खरीफ में नहर द्वारा इस गाँव के खेतों की सिंचाई की जाती है। यह जलाशय (बाँध) मुख्य रुप से वर्षा के पानी से भरता है। जिस साल पानी ज्यादा गिरता है उस साल बाँध से पर्याप्त पानी सिंचाई के लिए मिल जाता है नहीं तो रबी के मौसम में नहर से सिंचाई नहीं हो पाती।

uydwi

- ekufp= 9-2-3 e uydik dk igpkfu,A
- **ज्यादातर नलकूप किस प्रकार की मिट्टी में खुदे हैं ?**

ऊपरवेदी में हमने देखा था कि पहाड़ी इलाकों में कुएँ खोदना मुश्किल है और अगर कुआँ खोद भी लिया जाए तो पानी इतना नीचे होता है कि उससे सिंचाई नहीं की जा सकती। लेकिन मैदानों में कुएँ ज्यादा आसानी से खोदे जा सकते हैं। रिसदा के कई संपन्न किसानों ने अपने खेतों में नलकूप भी खुदवाए हैं। ये नलकूप 350 फीट की गहराई से पानी को निकालते हैं। लेकिन रिसदा में नलकूपों से अधिक पानी नहीं मिल पाता और एक नलकूप से केवल एक या दो एकड़ की ही सिंचाई हो पाती है। ये किसान अपने खेतों में खरीफ में धान और रबी में गेहूँ बोते हैं और सब्जी लगाते हैं। रिसदा में बिजली की व्यवस्था है जिसकी मदद से ये नलकूप चलते हैं।

rkykc

अपने छत्तीसगढ़ के मैदान के गाँवों में तालाबों का विशेष महत्व है।

चित्र 9.2.3 तालाब

आमतौर पर हरेक मैदानी गाँव में 8–10 तालाब होते हैं। ये चारों तरफ ऊँचे किनारों से घिरे होते हैं। इनमें वर्षा का पानी खेतों से होकर आता है। जहाँ नहर की सुविधा है वहाँ नहरों से भी तालाबों को भरा जाता है। लेकिन ज्यादातर तालाब पुराने मालगुजारों की निजी संपत्ति है। उनका रखरखाव और उनसे सिंचाई केवल तालाब के मालिक ही कर सकते हैं। लेकिन नहाने धोने, जानवरों को नहलाने या पानी पिलाने आदि के काम गाँव के सभी लोग कर सकते हैं।

रिसदा के मानचित्र 9.2.3 में देखिए–
वहाँ कुल कितने तालाब हैं।

सिंचाई के इतने साधनों के बावजूद रिसदा गाँव की लगभग एक तिहाई जमीन ही सिंचित हो पाती है। अभी भी दो तिहाई जमीन असिंचित ही है। इस कारण ज्यादातर जमीन पर बीज छिड़ककर धान की एक फसल ली जाती है। चलिए और पता करें कि धान कैसे उगाया जाता है।

1. पहाड़ों की तुलना में मैदानों में सिंचाई की क्या–क्या सुविधाएँ हैं ?

2. आप अपने इलाके की सिंचाई व्यवस्था की तुलना रिसदा की सिंचाई व्यवस्था से कीजिए।

Qly: vkj [krh d: rjhd:

रिसदा गाँव के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के अन्य मैदानी गाँवों में भी खरीफ और रबी दोनों तरह की फसलें पैदा की जाती हैं। खरीफ फसलों में धान, अरहर, उड़द, कोदो व तिल बोया जाता है। रबी फसलों में गेहूँ चना, सूरजमुखी, तिवरा, मसूर, मूँग और सब्जियों की खेती की जाती है।

ज्यादातर गाँवों में धान बोने की दो विधियाँ हैं –

1. fNMddj & इसे बोता विधि कहते हैं। पहली बारिश के बाद खेतों में धान छिड़ककर हल चला दिया जाता है। एक माह बाद जब पौधा कुछ बड़ा हो जाता है तो उसकी बियासी और निंदाई–चलाई कर दी जाती है। इस तरह धान की बुवाई करने से उत्पादन कम होता है। लेकिन पानी कम होने पर या सिंचाई के साधन न होने पर यह एक उपयुक्त तरीका है।

चित्र 9.2.4 धान की रोपाई

2. jkikbZ dj & इस पद्धति से उत्पादन अधिक होता है। इस विधि में बारिश शुरू होने पर खेत के किसी भाग में बीज डालकर पहले पौधे तैयार किए जाते हैं। इस बीच जिस खेत में रोपा लगाना हो उसमें पानी भरकर उसकी अच्छी जुताई–मताई की जाती है। पौधे जब लगभग एक माह के हो जाते हैं तब इन खेतों में उनकी रोपाई की जाती है। इस विधि में पौधों को समान दूरी पर लगाया जाता है। इससे पौधों को पौष्टिक तत्व भरपूर मात्रा में मिलता है। जमीन अधिक पोली हो जाने से पौधों की जड़ों को फैलने में आसानी होती है। खेत के खरपतवार भी नष्ट हो जाते हैं। इन्हीं कारणों से अब किसान रोपा पद्धति से धान की खेती करने लगे

हैं। परंतु रोपा विधि से धान बोने के लिए सिंचाई की व्यवस्था होना जरूरी है। सिंचाई साधनों की कमी होने के कारण अभी भी केवल एक चौथाई खेतों में ही रोपा पद्धति से धान की खेती होती है। यानी ज्यादातर खेतों में कम उपजाऊ तरीके का ही उपयोग होता है।

/kku dh ikjaifjd o vk/kqfud cht

छत्तीसगढ़ में धान की सैकड़ों किस्मों के पारंपरिक बीज उपयोग में लाए जा रहे हैं। प्रत्येक किस्म के बीजों का रंग, आकार, खुशबू और स्वाद अलग ही होता है, साथ ही उत्पादन भी एक खास तरह की मिटटी में ही होता है। कुछ जल्दी पकने वाली किस्में हैं तो कुछ देर से पकने वाली। कुछ कम पानी में होती हैं तो कुछ अधिक पानी में। इन्हें सैकड़ों सालों की मेहनत से हमारे किसानों ने पहचाना और बचाकर रखा है। धान की पारंपरिक किस्में हमारे प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं। लेकिन पारंपरिक बीजों से उत्पादन कम होने के कारण आजकल हमारे किसान नई किस्मों का प्रयोग करने लगे हैं। इससे उत्पादन अधिक होता है मगर इसमें खाद, दवा, पानी, आदि की लागत अधिक लगती है।

[ksr vkSj isM+

धान के खेत बड़े आकार के ऊँचे मेढ़वाले होते हैं। इन मेढ़ों पर कहीं–कहीं अरहर की फसल पैदा की जाती है। मेढ़ पर कहीं–कहीं साजा, बबूल, नीम, कौहा, महुआ, आम, आदि के पेड़ भी होते हैं। इन पेड़ों से किसानों की जलाऊ लकड़ी की समस्या भी हल हो जाती है। खेती के लिए आजकल आधुनिक मशीनों में सबसे अधिक उपयोग ट्रैक्टर का होता है। लेकिन छोटे किसान आज भी मनुष्यों और पशुओं की मेहनत पर ही निर्भर हैं।

चित्र 9.2.5 कृषि कार्य करते हुए किसान

पशुपालन

इस गाँव में बड़ी संख्या में गाय–बैल, बकरी और भैंस पाली जाती हैं। लेकिन किसानों का कहना है कि चारागाहों की कमी के कारण जानवरों की संख्या कम होती जा रही है। चारागाहों की कमी मैदानी इलाकों की

चित्र 9.2.6 खेत और पेड़

एक बड़ी समस्या है। मैदानी इलाकों में उपलब्ध अधिकांश जमीन पर खेती की जाती है, इसलिए जानवरों के लिए चारागाह बहुत कम ही बचे हैं।

fdlkuk dh leL;k,¡ vkj etnjk dk iyk;u

रिसदा के किसानों की सबसे बड़ी समस्या सिंचाई की समस्या है। लगभग पूरा गाँव कुकरदी जलाशय से निकली नहर पर ही निर्भर है। लेकिन इस जलाशय का जल ग्रहण क्षेत्र (जहाँ से पानी बहकर जलाशय में इकट्ठा होता है) कम है और जलाशय में गाद भर जाने के कारण इसमें पर्याप्त पानी भी नहीं भर पाता है। इस कारण इससे केवल खरीफ फसलों की सिंचाई ही हो पाती है।

1. आपके आसपास खरीफ की कौन–कौन सी प्रमुख फसलें पैदा की जाती हैं?
2. रबी की मुख्य फसल क्या है?
3. आपके आसपास धान की खेती ज्यादातर छिड़काव विधि से होती है या रोपाई विधि से?
4. किस विधि में सिंचाई की अधिक जरूरत पड़ती है?
5. आपके यहाँ धान के कौन–कौन से पुराने किस्म के बीज बोए जाते हैं?
6. नए और पुराने किस्म के बीजों में क्या अंतर है?
7. रिसदा और ऊपरवेदी के लोगों को जलाऊ लकड़ी कहाँ से मिलती है?
8. रिसदा के लोग जमीन जोतने के लिए ट्रैक्टरों का उपयोग करते हैं जबकि ऊपरवेदी में बैलों से जुताई करते हैं। ऊपरवेदी में ट्रैक्टरों का उपयोग क्यों नहीं करते हैं?

सिंचाई की कमी छत्तीसगढ़ के मैदानों की एक बड़ी समस्या है। इसकी वजह से यहाँ की ज्यादातर जमीन पर केवल खरीफ की फसल ही ली जाती है। शासन ने अब इनके रोजगार की ओर ध्यान देना शुरू किया है। सड़क निर्माण, वनों का सुधार, तालाब मरम्मत, ईंट निर्माण इत्यादि का काम करते हैं।

cLrh o xfy;k dh cukoV

रिसदा बलौदाबाजार जिले के बड़े गाँवों में से एक है। उस समय यहाँ की जनसंख्या लगभग 5000 थी। मकान एक दूसरे से काफी सटे हुए हैं। गलियाँ अत्यधिक सँकरी और घुमावदार हैं। अधिकतर मकान मिट्टी के बने हुए हैं

चित्र 9.2.7 सटे हुए मकान

जिनकी छत कवेलू से बनाए गए हैं। घरों के साथ छोटी बाड़ियाँ भी हैं जिनमें अपनी जरूरत की सागभाजी, आदि पैदा की जाती है। अब ईंटों से मकान तथा उसमें पक्के छतवाले मकान भी बनाए जाने लगे हैं।

रिसदा गाँव में एक साप्ताहिक बाजार लगता है जिसमें गाँव के लोग अपनी जरूरत की चीजें खरीदते हैं। गाँव में प्राथमिक सहकारी बैंक है व उचित मूल्य की दुकान भी उपलब्ध है। गाँव के लोगों को पीने का पानी जलप्रदाय टंकी बनाकर नलों द्वारा पहुँचाया जाता है। गाँव में बिजली की भी सुविधा है जिससे घरों और गलियों में रोशनी के साथ नलकूपों में मोटरपंप चलाकर खेतों की सिंचाई की जाती है। कृषि उपजों को ट्रैक्टर या बैलगाड़ी में लादकर बलौदाबाजार की मंडी में बेचा जाता है। रिसदा गाँव से बस द्वारा कहीं भी आने–जाने की सुविधा है। यहाँ से बस बलौदाबाजार और फिर वहाँ से रायपुर और दूसरी तरफ हथबंद तक जाती है जहाँ रेल्वे स्टेशन भी है।

ऊपरवेदी के मकानों की तुलना रिसदा के मकानों से करिए। दोनों में क्या समानता व अंतर दिखाई देते हैं?

इस तरह यातायात की सुविधा मैदानी गाँवों में अधिक है। आपको याद होगा कि ऊपरवेदी गाँव से पास के कस्बे तक कोई पक्की सड़क या बस की सुविधा नहीं थी।

ifjorlu dh ygj

रिसदा गाँव के लोगों को अब अपने जीवन में काफी बदलाव दिखाई देने लगा है। पढ़े–लिखे लड़के अब अपनी दुकान या रोजगार चलाने लगे हैं। वे गाड़ियों की मरम्मत, बिजली के सामानों को सुधारने, कपड़ा सिलाई, आदि का काम करने लगे हैं। काम की तलाश में अन्य राज्यों में जानेवाले लोगों की संख्या भी अब कम हुई है।

चित्र 9.2.8 ईंट बनाते हुए मजदूर

कुछ लोग अब बाहर जाना छोड़कर गाँव में ही ईंट और कवेलू (खपरैल) बड़ी मात्रा में बनाने लगे हैं। इस काम में परिवार के सभी लोग मिलजुल कर सहयोग करते हैं। आस–पास के गाँवों में इन ईंटों और कवेलू की खपत अधिक है। कामकाज बढ़ने से महिलाओं में जागरूकता बढ़ी है और उन्होंने अपना स्व–सहायता समूह भी बना लिया है।

रिसदा में कई जाति और काम–धंधे करनेवाले लोग रहते हैं। लेकिन रिसदा में आर्थिक विषमता अधिक है। कुछ लोगों के पास अधिक जमीन है जबकि ज्यादातर लोगों के पास बहुत कम जमीन है।

D;k Åijonh xkao esa Hkh bl fdLe dh fo"kerk g\

अभ्यास के प्रश्न

¼v½ [kkyh LFkkuk dk Hkfj, %&

1. नदियाँ पहाड़ी और पठारी इलाकों से ....लाकर मैदानी इलाकों में बिछाती हैं।
2. पहाड़ों की तुलना में मैदानों की जमीन .... होती है।
3. रिसदा गाँव में फसलों की सिंचाई ज्यादातर .... से होती है।
4. रिसदा गाँव के लोगों को पीने का पानी .... से मिलता है।

¼c½ lgh@xyr crkb, %&

1. मैदानी गाँव में फसलों की पैदावार पहाड़ी गावों से अधिक होती है।
2. मैदानी गाँव में पहाड़ी गावों के मुकाबले कम लोग रहते हैं।
3. मैदानी गाँव के लोग जंगलों पर काफी निर्भर होते हैं।
4. रिसदा में एक ही जाति के लोग रहते हैं।

¼l½ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. नदियों द्वारा मैदान किस प्रकार बनाए जाते हैं ?
2. मैदानी इलाकों के गाँवों में लोगों के घर सटे–सटे क्यों होते हैं ?
3. मैदानी इलाकों में सिंचाई के कौन–कौन से साधन हैं ?
4. छत्तीसगढ़ के मैदानी गाँवों में धान की खेती ज्यादातर छिड़ककर विधि से क्यों की जाती है ?
5. रिसदा के लोगों ने अब काम की तलाश में दूसरे राज्यों में जाना क्यों कम कर दिया है ?

ppk djs %&

आप Åijonh vkj fjlnk xko e ls fdl xko e jguk pkgxs \ ppk djs ।

नोट :– यह पाठ सन् 2004 के तत्कालीन सर्वेक्षण के आधार पर लिखा गया है। वर्तमान में वास्तविक स्वरूप में कुछ अंतर हो सकता है।

9.3 पठार का एक गाँव-चाल्हा

55WE3V

पिछले दो पाठों में आपने छत्तीसगढ़ पहाड़ी गाँव ऊपरवेदी और मैदानी गाँव रिसदा के बारे में पढ़ा। आपने देखा कि पहाड़ों के तेज ढालवाली जमीन पर खेती कम हो पाती है और वहाँ के आदिवासी जंगलों पर ज्यादा निर्भर रहते हैं। ठीक इसके विपरीत मैदानी गाँव में सारी जमीन पर खेती होती है और सिंचाई की सुविधा होने पर दो फसलें ली जाती हैं। अब हम इस पाठ में एक और तरह के गाँव के बारे में पढ़ेगें जो पठार पर स्थित है।

चित्र 9.3.1 चाल्हा गाँव का रास्ता

रायगढ़ का पठार

छत्तीसगढ़ का मैदान एक कटोरे के समान है जिसके चारों ओर ऊँचा भू–भाग है। दक्षिण दिशा में अबूझमाड़ पहाड़ियाँ और बस्तर के पठार हैं। पश्चिम में मैकल श्रेणी तथा उत्तर में सरगुजा, रायगढ़ और जशपुर के पठार हैं। इस पाठ में हम रायगढ़ पठार पर बसे एक गाँव के बारे में पढ़ेंगे।

छत्तीसगढ़ के एटलस में रायगढ़ का पठार पहचानिए। यह पठार महानदी की किस दिशा में है?

पठार क्या है ?

मैदान की तुलना में पठार एक ऊँचा प्रदेश होता है। वहाँ पहुँचने के लिए ऊँचे कगारों पर चढ़ना पड़ता है लेकिन पठार के ऊपर पहुँचने पर हमें समतल हल्की ऊँची–नीची ज़मीन दिखती है। यहाँ पर ऊपरवेदी की तरह तेज ढलानें नहीं होती हैं।

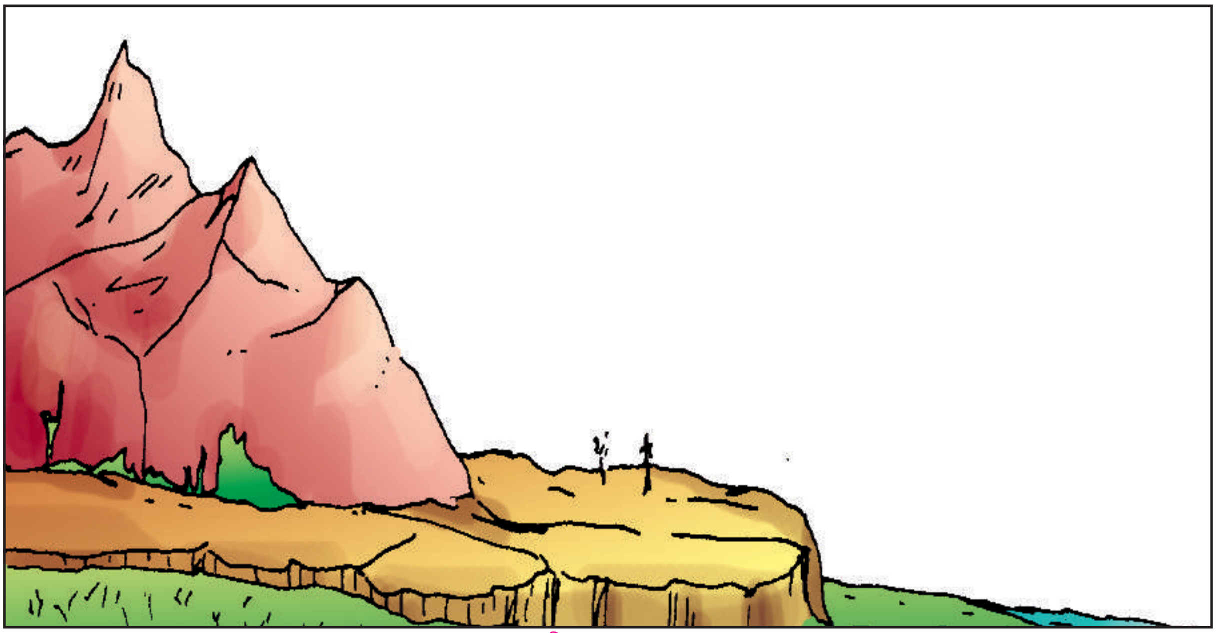

चित्र 9.3.2

pkYgk dh fLFkfr

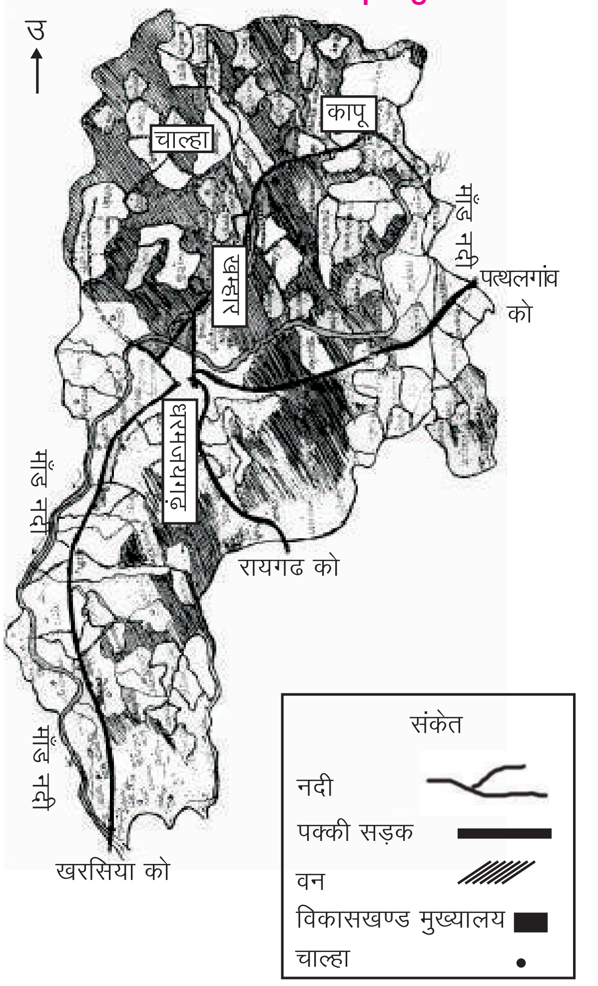

ekufp= 9-3-1

रायगढ़ शहर महानदी के उत्तर में मैदानी भाग में बसा हुआ है। रायगढ़ से उत्तर दिशा में धरमजयगढ़ के रास्ते में कुडुमकेला नाम की जगह पर हमें कगार पर चढ़ना पड़ता है। कगार पर चढ़कर कुछ दूर समतल रास्ते से जाने पर धरमजयगढ़ स्थित है। धरमजयगढ़ के उत्तर में 18 किलोमीटर की दूरी पर खम्हार नाम की एक बड़ी बस्ती है। यहाँ से पश्चिम दिशा में घने जंगल से होते हुए एक कच्ची सड़क जाती है। यहीं सड़क कगार पार करती है। कगार पार करने पर समतल जमीन मिलती है जिसमें चाल्हा गाँव बसा हुआ है।

धरातल और मिट्टी

हम पहले पढ़ चुके हैं कि चाल्हा गाँव का ऊपरी धरातल समतल है। गाँव के बीच में से एक नाला बहता है। इस नाले की तरफ चारों दिशाओं से हल्की ढाल है। गाँव की सीमा पर जमीन काफी ढलवाँ है और वहाँ ऊँचे टीले भी हैं। गाँव के उत्तर में पहाड़ी है। इन ऊँचे भागों से बहकर आई मोटी रेत और पत्थर यहाँ की मिट्टी में मिल गए हैं। इस कारण अधिकांश मिट्टी रेतीली और पथरीली है। इस मिट्टी में अभ्रक के टुकड़े चमकते दिखाई देते हैं। गाँव के पश्चिमी भाग में

लाल मिट्टी की गहरी परत मिलती है। बड़े–बड़े खेत बने हैं। गाँव के उत्तर में पहाड़ी की तली में काली मिट्टी है और दक्षिण में पीली मिट्टी है।

चाल्हा गाँव के लगभग तीन–चौथाई भाग पर खेती की जाती है। केवल एक चौथाई भाग पर जंगल और पहाड़ी है। आपको याद होगा कि पहाड़ी गाँवों में गाँव के बहुत छोटे हिस्से पर खेती की जाती है जबकि मैदानी गाँवों के लगभग पूरे हिस्से पर खेती होती है।

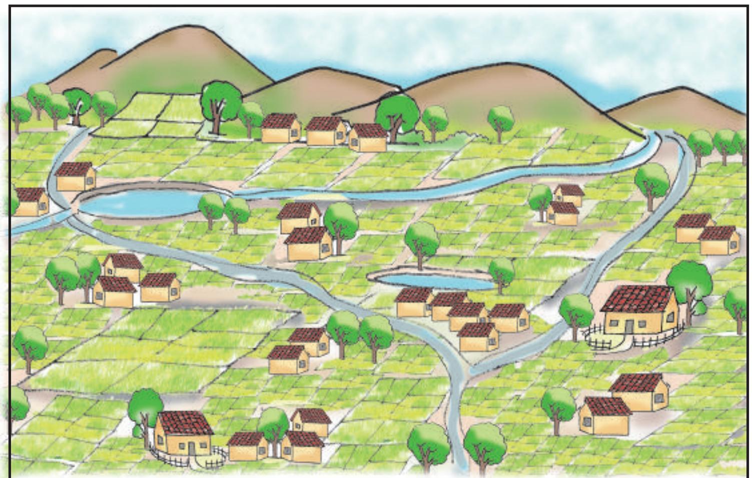

fp= 9-3-3 pkYgk xk¡o vkj [ksr

चित्र 9.3.4 – खेत

जमीन हल्की ऊँची–नीची होने के कारण पठारों की मिट्टी में विविधता होती है। ढलवाँ जमीन पर रेतीली–पथरीली मिट्टी की पतली परत होती है। समतल या निचले हिस्सों में गहरी लाल या काली मिट्टी की परत मिलती है। इस कारण इन गाँवों में सारी जमीन पर एक–सी फसल नही बोई जाती है। मिट्टी की क्षमता के अनुसार अलग–अलग फसलें ली जाती हैं।

पानी के स्रोत और सिंचाई

चाल्हा के खेत और फसलों के बारे में जानने से पहले हम वहाँ पानी की व्यवस्था के बारे में

1. पठारी गाँवों में मैदानी गाँवों की तुलना में अधिक/कम जमीन पर खेती की जाती है। क्यों?
2. चाल्हा गाँव की अधिकांश मिट्टी——— और ——— है जबकि मैदानी गाँव रिसदा की अधिकांश जमीन ——— और ———— है।
3. चाल्हा गाँव के ———— भाग में सबसे अच्छी खेती होती होगी। (उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी)

चित्र 9.3.5 ढोढ़ी

1. आपके गाँव/शहर में पीने का पानी कहाँ से मिलता है?
2. ऊपरवेदी, रिसदा और चाल्हा–इन तीन गाँवों में से किसमें पीने का पानी सबसे आसानी से मिलता है?
3. कहाँ पर सबसे अधिक कठिनाई से पानी मिलता है ? क्यों?
4. रिसदा में मवेशियों के लिए व नहाने–धोने के लिए पानी कहाँ उपलब्ध है ?
5. नलकूप में लाल पानी क्यों निकलता है।

जानें। यहाँ के लोग पुराने समय से पीने के पानी के लिए ढोढ़ी का उपयोग करते आए हैं।

ढोढ़ी एक कम गहरा कुआँ होता है जिसके किनारे सरई की लकड़ी से चौरस बाँध बना दिया जाता है। ढोढ़ी में चट्टानों के बारीक छेद से पानी रिसकर आता है और हमेशा पानी भरा रहता है। यहाँ कुएँ नहीं हैं। आजकल यहाँ पेयजल के लिए कई नलकूप खोदे गए हैं लेकिन इनमें से कुछ में पानी लाल होने के कारण ये बंद पड़े हैं।

चित्र 9.3.6 बाँध

आपको याद होगा कि चाल्हा गाँव के बीच से एक नाला बहता है। गाँव के लोग आपसी सहयोग से श्रमदान करके हर साल बारिश के बाद इस नाले पर बाँध बनाते हैं। इस प्रकार इकट्ठे हुए पानी का उपयोग वे सालभर नहाने या मवेशियों को नहलाने के लिए करते हैं। लेकिन चाल्हा गाँव में खेतों के लिए कोई सिंचाई का साधन नहीं है, यानी यहाँ की खेती पूरी तरह वर्षा पर निर्भर है।

फसल

चाल्हा गाँव की खेती पूरी तरह वर्षा पर निर्भर होने के कारण यहाँ खरीफ में ही फसल बोई जाती है। गाँव की अधिकतर भूमि पर धान की खेती होती है और सिंचाई के अभाव में धान छिड़ककर ही बोया जाता है। धान के अलावा,

1. यहाँ किस तरह की मिटटी में धान बोया जाता होगा? कारण सहित समझाइए।
2. चाल्हा में रबी की कोई फसल क्यों नहीं उगाई जाती है?

चित्र–9.3.7 सब्जियाँ

खरीफ की फसल में यहाँ राहर (अरहर), झुनगा, उड़द, मक्का, रामतिल, आदि की फसलें पैदा की जाती हैं। मिट्टी रेतीली–पथरीली होने के कारण यहाँ उत्पादन कम होता है। रबी की खेती के समय यहाँ के लोग सिर्फ बाड़ियों में साग–सब्जी पैदा करते हैं।

भोजन

चाल्हा के लोगों का मुख्य भोजन पेज, भात और साग–सब्जी है। दाल का उपयोग यहाँ कम ही होता है। कभी कभार यहाँ के लोग मांस–मछली भी खाते हैं। मांस के लिए ये लोग मुर्गी, सुअर, बकरी, आदि पालते हैं।

यहाँ के लोग महुए के बीज (डोरी) से तेल निकालकर उसका उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त ये लोग जटंगी ओर सरसों का तेल भी खाते हैं।

तिरही

चित्र–9.3.8 तिरही

तिरही गाँव में ही लकड़ी से बनाया गया एक ऐसा यंत्र है जिससे महुआ बीज (डोरी) से तेल निकालते हैं। यह केवल एक यंत्र नहीं बल्कि गाँव के लोगों के आपसी भाईचारे व सहयोग की भावना का प्रतीक है। इस यंत्र से तेल निकालने के लिए गाँव के लोगों की बारी लगती है। इस यंत्र के दो पाटों के बीच डोरी को दबाकर तेल निकाला जाता है। इसके लिए गाँव के सभी समाज के चार–छः जवानों की टीम बारी–बारी से यंत्र को चलाते हैं। निकलने वाला तेल डोरी मालिक ले जाता है। अगली बार वह स्वयं दूसरे व्यक्ति को सहयोग करने पहुँच जाता है। इस तरह यह गाँवों में सहकारिता की भावना का अनूठा उदाहरण है।

जंगल पर निर्भरता

यह पूरा पठारी क्षेत्र एक फसल पैदा करनेवाला है। इस कारण यहाँ के लोग खरीफ की फसल की कटाई के बाद खाली हो जाते हैं। खेतों में पैदावार कम होने के कारण यहाँ के लोगों का गुजारा खेती से सालभर नहीं चल पाता है। अतः अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वे जंगलों पर निर्भर हैं।

चाल्हा गाँव की बाहरी सीमा से ही सघन वन शुरू हो जाता है। इन वनों में साल, साजा, बीजा, तेंदू, चार, महुआ, घौरा, आम, साल्हिया आदि पेड़ों की अधिकता हैं। गाँव के पास आम, इमली, करंज और कटहल के घने पेड़ हैं। इनसे यहाँ के लोगों को फल–फूल मिल जाते है। यहाँ जंगल से तरह–तरह के कंद–मूल आदि भी इकट्ठे किए जाते हैं, जैसे पिठारू, कठारू, गैंठ, कांदा, बोदा कांदा, सियो कांदा, आदि। लोग इन्हें उबालकर नमक के साथ खाते हैं। जंगल से कोईलार की पत्तियाँ इकट्ठी करके उनकी सब्जी बनाकर भी खाई जाती है।

चाल्हा गाँव के लोगों को आस–पास के जंगलों से बाजार में बेचने के लिए भी काफी चीजें मिलती हैं। गर्मी के दिनों में तेन्दू पत्ता, माहुल पत्ता, चार, महुआ फूल, आदि इकट्ठा करके स्थानीय बाजार में बेचा जाता है। जंगलों से धवाई फूल, लाख, धूप और कई तरह की दवाईयाँ भी संग्रह की जाती हैं।

माहुल या मोहलाई पत्ता

ये पत्ते बड़े उपयोगी होते हैं। दक्षिणी राज्यों में माहुल पत्तों से बने दोने और पत्तल में भोजन किया जाता है। अतः इस क्षेत्र से माहुल पत्ते व्यापारियों द्वारा आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के बाजारों में बेचे जाते है।

चित्र–9.3.9 माहुल पत्ता

चित्र–9.3.10 महुआ

इस तरह गर्मी के दिनों में यहाँ के लोग जंगलों से तरह–तरह के वनोपज इक्कठा करने में व्यस्त हो जाते हैं। उनके द्वारा इकट्ठी की गई चीजें दूर–दराज के बाजारों में बिकने जाती हैं। आप जानते होंगे कि तेंदू पत्ता बिड़ी बनाने के काम में आता है। इसी तरह माहुल पत्तों का दोना–पत्तल बनाने के कारखानों में खूब माँग है।

चाल्हा गाँव के लोगों को भोजन पकाने के लिए ईंधन और घर बनाने के लिए लकड़ियाँ भी जंगलों से ही मिलती है। जानवरों को चराने के लिए ये लोग जंगलों में ही ले जाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस क्षेत्र के पठारी गाँव के लोग खेतों में उत्पादन कम होने के कारण जंगलों पर काफी निर्भर हैं।

> क्या आपने जंगलों पर इस प्रकार की निर्भरता रिसदा में भी देखी थी?
>
> पहाड़ी गाँव ऊपरवेदी और पठारी गाँव चाल्हा के बीच जंगलों के उपयोग में क्या समानता दिखी ? चर्चा करें।

बस्ती और घर

चाल्हा गाँव में कुल 290 घर थे और उनमें लगभग 1350 लोग रहते थे। सभी घर कच्ची ईंटों व खपरैल से बने हैं। मकानों के निर्माण में लकड़ी का ज्यादा उपयोग किया जाता है। सारे घर एक दूसरे से सटे हुए हैं। गाँव चार प्रमुख मोहल्लों (पारों) में बँटा हुआ है।

> ऊपरवेदी और चाल्हा की बस्ती और घरों की तुलना कीजिए।

चाल्हा गाँव में कई जाति व जनजाति के लोग रहते हैं, मंझवार, पनिका, चौहान, माहकुल, ऊराँव, ब्राह्मण, अग्रवाल, आदि। कई तरह के लोगों के एक साथ रहने के कारण गाँव में रीति–रिवाज और

तीज–त्यौहार भी सभी तरह के मनाए जाते हैं। गाँववाले फसल कटने से पहले या जंगल में महुआ इक्टठा करने से पहले सामूहिक रूप से पूजा करते हैं।

गाँव में कई कारीगर भी हैं– कुछ लोग बाँस से टोकरी, चोरिया, झाँपी, पर्रा, बिजना, डाली, सूपा, आदि बनाकर बेचते हैं। कुछ कारीगर किसानों के लिए लोहे व लकड़ी के औजार और घरेलू उपयोग के सामान भी बनाते हैं।

fp=&9-3-11 Vkduh cukrk g,vk dkjhxj

बाजार और व्यापार

चाल्हा गाँव में हर बुधवार को साप्ताहिक बाजार लगता है। इसमें बाहर से व्यापारी जरूरी सामान बेचने आते हैं। इस गाँव में अभी भी ''वस्तु विनिमय'' चलन में हैं। गाँव के लोग जंगल से इकट्ठा की गई वनोपज के बदले कपड़े, बर्तन,आदि सामान प्राप्त करते हैं।

पठारी इलाकों में आमतौर पर खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में मिलती है। चाल्हा गाँव में भी अभ्रक नामक चमकीले खनिज की परत दिखाई देती हैं। अभ्रक का उपयोग मुख्य रूप से बिजली के समान बनाने में होता है। लेकिन अभी तक चाल्हा में इस खनिज का कोई उपयोग शुरु नहीं हुआ है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य

चाल्हा गाँव में एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है जहाँ बीमार लोगों का इलाज होता है। यहाँ प्राथमिक और माध्यमिक शाला भी है। इसके कारण गाँव के लगभग एक तिहाई लोग पढ़–लिख सकते हैं। लेकिन शाला के शिक्षक बताते हैं कि यहाँ के बच्चे भी अक्सर पालकों के साथ जंगल चले जाते हैं और शाला नहीं आ पाते हैं। इस गाँव में बिजली भी उपलब्ध है।

शिक्षा और स्वास्थ्य के संदर्भ में ऊपरवेदी और चाल्हा की तुलना कीजिए।

गाँव के लोगों की समस्याएँ

चाल्हा गाँव के लोग बताते हैं कि सिंचाई के साधनों की कमी उनकी एक बड़ी समस्या है। इसके कारण वे खेतों में उत्पादन नही बढ़ा पा रहे हैं। उनकी दूसरी बड़ी समस्या है वनोपज का उचित दाम न मिलना। यहाँ के लोग चाहते हैं कि यहाँ के वनों में मिलने वाले दुर्लभ पौधों की खेती की जाए और फिर इन्हें उचित दामों पर दवा बनानेवालों को बेचने की व्यवस्था की जाए।

चाल्हा गाँव के लोग अपने जीवन में वनों के महत्व को जानते हैं और उसकी रक्षा के लिए वे प्रयास भी करते रहते हैं।

मैदान, पहाड़ और पठार की तुलना

आपने तीनों क्षेत्रों के गाँवों के बारे में पढ़ा – आइए अब इन तीनों की तुलना शिक्षक से चर्चा कर करें। मैदान का गाँव **रिसदा**, पहाड़ का गाँव **ऊपरवेदी**, पठार का गाँव **चाल्हा**।

इन तीनों इलाकों में संसाधनों की कमी नहीं है। कहीं खेती के संसाधन अधिक हैं तो कही जंगल या खनिज संसाधन है। इन संसाधनों का उपयोग इस प्रकार हो जिससे कि समुचित विकास हो और इन इलाकों में रहनेवाले सभी लोगों को इसका फायदा पहुँचे। यह हमारे राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

शिक्षक से चर्चा करें।

1. कौन से गाँव की जमीन खेती के लिए अधिक उपयोगी है, कहाँ की कम और कहाँ की सबसे कम उपयोगी है?
2. किस गाँव में गहरी और उपजाऊ मिट्टी अधिक मिली ?
3. किस गाँव में सिंचाई के साधन उपलब्ध है ?
4. किस गाँव में अच्छी व पक्की सड़कें हैं तथा किस गाँव में पहुँचना सबसे कठिन है ?
5. कहाँ पर कई तरह के कारीगर व व्यवसायी किसानों के साथ रहते हैं ?
6. कहाँ के लोग जंगलों पर सबसे अधिक निर्भर हैं ?
7. कहाँ के लोग जंगलों पर सब से कम निर्भर हैं ?
8. क्या आपने ऐसी कोई समस्या देखी जो तीनों इलाकों में मौजूद हो ?

अभ्यास के प्रश्न

¼V½ रिक्त स्थानों को भरिए–

1. चाल्हा गाँव के लोगों का मुख्य भोजन ––––––––– है ।
2. इस गाँव के –––––––––पढ़े लिखे हैं ।
3. ––––––––––कम गहराई का कुआँ है जिसमें पीने का पानी मिलता है ।
4. ––––––––की पत्ती का उपयोग पत्तल /दोने बनाने में होता है।
5. चाल्हा में रबी में केवल कुछ ––––––––– उगाई जाती है।

¼C½ इन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

1. चाल्हा गाँव कहाँ पर बसा है ?
2. नाले के पानी को रोकने के लिए चाल्हा के लोग क्या करते हैं ?
3. चाल्हा में कौन–कौन सी फसलें बोयी जाती हैं ?
4. यहाँ कौन–कौन से कारीगर रहते हैं ?
5. यहाँ के लोगों को वनों से क्या–क्या चीजें मिलती हैं ?

¼l½ विस्तार से लिखिए–

चाल्हा गाँव की खेती और मैदानी गाँव रिसदा की खेती की तुलना करके बताइए कि उनमें क्या समानताएँ है और क्या असमानताएँ हैं।

मिट्टी –

सिंचाई –

फसल –

नोट :– यह पाठ सन् 2004 के तत्कालीन सर्वेक्षण के आधार पर लिखा गया है। वर्तमान में वास्तविक स्वरूप में कुछ अंतर हो सकता है।

भारत के राज्य और केंद्र शासित क्षेत्र

राज्य	राजधानी	केंद्र शासित क्षेत्र	राजधानी
आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह	पोर्ट ब्लेयर
अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	चंडीगढ़	चंडीगढ़
असम	दिसपुर	दादरा और नगर हवेली	सिलवासा
बिहार	पटना	दमन और दीव	दमन
छत्तीसगढ़	रायपुर	लक्षद्वीप	कवरत्ती
गोवा	पणजी	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी
गुजरात	गांधीनगर	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली
हरियाणा	चंडीगढ़		
हिमाचल प्रदेश	शिमला		
जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर		
झारखंड	राँची		
कर्नाटक	बेंगलूरू		
केरल	थिरुवनंथपुरम		
मध्यप्रदेश	भोपाल		
महाराष्ट्र	मुंबई		
मणिपुर	इंफाल		
मेघालय	शिलांग		
मिज़ोरम	आइज़ोल		
नागालैंड	कोहिमा		
ओडिशा	भुवनेश्वर		
पंजाब	चंडीगढ़		
राजस्थान	जयपुर		
सिक्किम	गंगटोक		
तमिलनाडु	चेन्नई		
तेलंगाना	हैदराबाद		
उत्तराखण्ड	देहरादून		
उत्तर प्रदेश	लखनऊ		
त्रिपुरा	अगरतला		
प. बंगाल	कोलकाता		

परिशिष्ट–II

अधिक जानकारी के लिए इंटरनेट के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत

www.sci.edu/public.html

www.si.edu-and www.nasm.edu

http://volcanoes.usgs.gov/

discoveryschool.com/dysee

www.futureforests.com/calculators/flightcalculatorshop.asp

www.nationalgeographic.com/earthpulse

http://www.cpcb.nic.in

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

एक न्यूनतम स्वच्छ विद्यालय पैकेज

(स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय)

पेयजल है स्वच्छ, स्वच्छ है शौचालय,
स्वच्छ रहते हैं बच्चे, स्वस्थ है विद्यालय।

स्रोत – स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय, एक राष्ट्रीय मिशन, एक पुस्तिका, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार